

This question paper contains 4 printed pages.

Your Roll No.

Sl. No. of Ques. Paper: 3294 HC
Unique Paper Code : 12137902
Name of Paper : Art of Balanced Living (DSE)
Name of Course : B.A (Hons.) Sanskrit
Semester : V
Duration : 3 hours
Maximum Marks : 75

(Write your Roll No. on the top immediately
on receipt of this question paper.)

NOTE:— Unless otherwise required in a question, answers
should be written in Sanskrit or in Hindi or in
English, but the same medium should be used
throughout the paper.

टिप्पणी:— अन्यथा आवश्यक न होने पर इस प्रश्न-पत्र का उत्तर
संस्कृत या हिन्दी या अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिए
परन्तु सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए।

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

Answer all questions.

भाग क (SECTION A)

1. बृहदारण्योपनिषद् के आधार पर श्रवण, मनन और निदिध्यासन
के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

Describe the nature of the notions of *Śravaṇa*,
Manana, and *Nididhyāsana* on the basis of
Bṛihadāraṇyopaniṣad.

11
P. T. O.

3294

2

अथवा (Or)

आत्माभिव्यक्ति को श्रेष्ठ बनाने में श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन
की महत्ता का वर्णन कीजिए।

Describe the importance of the notions of *Śravaṇa*,
Manana, and *Nididhyāsana* for betterment of the idea
of Self-presentation. 11

भाग ख (SECTION B)

2. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए:

Explain the following:

(क) योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः

अथवा (Or)

तत्र स्थितौ यत्नोऽध्यासः।

(ख) शौचसंतोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः।

अथवा (Or)

तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोगतिविच्छेदः प्राणायामः।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणियाँ लिखिए:

Write short notes on any three of the following:

(क) वैराग्य

(ख) आसन

(ग) यम

(घ) चित्त की प्रसन्नता के उपाय

(ड) ध्यान ।

6×3=18

भाग ग (SECTION C)

4. निम्नलिखित की व्याख्या लिखिए:

Explain the following:

(क) नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः

शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्धयेदकर्मणः ।।

अथवा (Or)

इष्टान्भोगान्निह वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः ।।

तैर्दत्तान्प्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः ।।

(ख) यतो यतो निश्चरति मनश्चंचलमस्थिरम् ।

ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत ।।

अथवा (Or)

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन ।

सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ।।

(ग) मय्यासक्तमनां पार्थ योगं युज्जन्मदाश्रयः ।

असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु ।।

अथवा (Or)

रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः ।

प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ।।

(घ) ये तु सर्वाणि कर्माणि भयि सन्यस्य मत्पराः

अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते ।।

Or (अथवा)

अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोति मयि स्थिरम् ।

अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय ।।

5. गीता के आधार पर सन्तुलित जीवन के लिए 'कर्म-योग' की महत्ता का वर्णन कीजिए ।

Describe the importance of "Karma-Yoga" for a balanced living on the basis of Gita. 8

अथवा (Or)

गीता के आधार पर सन्तुलित जीवन के लिए 'ध्यान-योग' की महत्ता का वर्णन कीजिए ।

Describe the importance of "Dhyana-Yoga" for a balanced living on the basis of Gita. 11